

## जनजाति क्षेत्र में कार्यरत संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता, मनोबल एवं कार्यशैली का विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

सोमेश नागदा <sup>1</sup>, डॉ. खेलशंकर व्यास <sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

<sup>2</sup> शोधार्थी पर्यवेक्षक, शिक्षा शास्त्र विभाग, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत

### सारांश

प्रस्तुत शोध में राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में संचालित राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व क्षमता एवं प्रबंधकीय कौशल का विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसे उदयपुर एवं डूंगरपुर जिलों के चयनित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संपन्न किया गया। अनुसंधान हेतु कुल 50 विद्यालयों के 50 प्रधानाचार्यों को उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श पद्धति से चुना गया।

शोध हेतु स्वनिर्मित एवं विशेषज्ञों द्वारा सत्यापित उपकरणों का उपयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात (CR) जैसी सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के शैक्षणिक नेतृत्व व्यवहार में समग्र रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं है। तथापि, क्षमता उत्प्रेरक (Capacity Building) आयाम पर निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य राजकीय विद्यालयों की तुलना में अधिक प्रभावी पाए गए। इसी प्रकार प्रबंधकीय प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों — कार्यात्मक, पारस्परिक एवं व्यक्तिगत प्रभावशीलता — में दोनों समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि यद्यपि दोनों प्रकार के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का सामान्य नेतृत्व व्यवहार लगभग समान है, किंतु निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य अधिक प्रेरक क्षमता का प्रदर्शन करते हैं, जिससे विद्यालय का शैक्षणिक वातावरण सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। शोध यह भी इंगित करता है कि जनजातीय क्षेत्रों के राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को संगठित नेतृत्व एवं प्रबंधकीय प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है, जिससे उनकी प्रभावशीलता बढ़े और विद्यालय की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

**मुख्य शब्द:** नेतृत्व क्षमता, प्रबंधकीय कौशल, जनजातीय विद्यालय, शैक्षणिक गुणवत्ता, राजकीय एवं निजी विद्यालय, राजस्थान

### आमुख

विद्यालय में प्रधानाचार्य का सर्वोच्च स्थान प्राप्त है वे कुशल शैक्षणिक नेतृत्व, प्रबंधकीय के कौशल के द्वारा विद्यालय को निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर अग्रसर करते हैं। विद्यालय में प्रधानाचार्य की ठीक उतनी ही आवश्यकता होती है जितनी खेल के मैदान में कप्तान की और युद्ध के मैदान में सेनापति की। जैसा प्रधानाचार्य वैसा ही होगा विद्यालय।

प्रधानाचार्य को भूमिका निर्वहन में एक विशेष प्रकार के संबंधों को बनाना होता है जो उन परिस्थितियों में उत्तरदायित्व तथा अधिकारों को निर्धारित करते हैं, भूमिकाओं के निर्वहन में संबंधों में समन्वय न होने पर संकट तथा समस्या उत्पन्न होती है। इस प्रकार विचारों दृष्टिकोण और भावनाओं में अंतर होने पर समन्वय के स्थान पर द्वन्द्व की संभावना बढ़ जाती है और प्राचार्य को अपनी भूमिका निर्वहन में कठिनाई उत्पन्न होती है जिससे प्रबंधकिय संकट उत्पन्न हो जाता है। प्रधानाचार्य किस प्रकार इन संकटों का निवारण करता है यह उसकी प्रबंध एवं नेतृत्व कुशलता की एक परीक्षा होती है इसका सामना किस प्रकार करना है यह उसकी कुशलता पर निर्भर करता है। जिस प्रकार घड़ी में जो मुख्य स्प्रिंग का काम है, तथा मशीन में जो पहिये का स्थान है, अथवा पानी के जहाज में जो इंजन का स्थान है— विद्यालय में वही स्थान प्रधानाचार्य का है <sup>1</sup> विद्यालय में प्रधानाचार्य का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रधानाचार्य विद्यालय की प्रमुख शक्ति हैं, जिनके ऊपर विद्यालय की उन्नति एवं अवनति निर्भर करती है। प्रधानाचार्य सम्पूर्ण विद्यालय की प्रगति का प्रेरणा स्रोत है, उसका स्थान विद्यालय में वही है जो स्थान जीव का शरीर में है। वह विद्यालय में प्रधानाचार्य ही नहीं है वरन प्रशासक के रूप में एक संगठनकर्ता, संयोजक, पर्यवेक्षक, निदेशक, शिक्षकों का नेता तथा अध्यापक भी हैं। जिस प्रकार

समाज नेता का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। नेता के अभाव में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नवीन परिवर्तन लाया जाना मुश्किल होता है।

कुबरली के अनुसार — प्रधानाचार्य केवल प्रशासक होने के कारण नेता नहीं है अपितु उसके नेतृत्व के प्रधान अंग है तर्कशक्ति, प्रगाढ़ ज्ञान तथा अदम्य उत्साह <sup>2</sup>

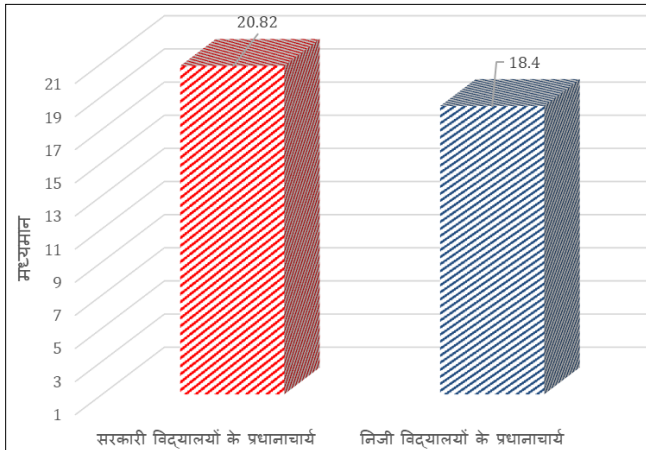
विद्यालय में एकता बनाए रखने, विभिन्न गतिविधियों में संतुलन बनाए रखने तथा विद्यालय को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए प्राचार्य एक शक्ति रूप में कार्य करता है। प्रधानाचार्य विद्यालय का ऐसा केंद्रबिंदु है जिसके चारों ओर विद्यालय की समस्त क्रियाएं संपन्न होती हैं। शिक्षक, विद्यार्थी एवं विद्यालय के कर्मचारी सभी उसी की प्रेरणा से तथा उसके व्यक्तित्व के गुणों के आधार पर शैक्षणिक क्रिया करते हैं। इस चरित्र में उसे छात्र— छात्र, शिक्षक—शिक्षक, शिक्षक—शिक्षक, शिक्षक—निरीक्षक, शिक्षक—अभिभावक आदि के संबंधों को संतुलित एवं सरीक्षित करना पड़ता है। प्रधानाचार्य की शिक्षा संबंधी ज्ञान के ऊपर ही संपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रम की उन्नति एवं सफलता निर्भर है। यदि वह प्रचलित शिक्षा संबंधी सिद्धांतों एवं प्रयोगों से स्वयं को अवगत नहीं कराता अथवा उसे व्यावहारिक ज्ञान नहीं है तो अपने शिक्षकों को या साथियों का नेतृत्व नहीं कर सकता।

### शोध समस्या का औचित्य

वर्तमान में शिक्षकों के लिए सबसे आवश्यक यह है कि जो नए परिवर्तन द्रुतगति से हो रहे हैं, उन्हें समझा, स्वाध्याय से उसमें अनुपयोगी तत्वों को बाहर निकाला जाए। अध्यापक का धर्म सतत अध्ययन व स्वयं को आदर्श प्रस्तुत करना है। शिक्षा — शास्त्रियों के अनुसार अब शिक्षा में धरातल पर होनी चाहिए, यही सही समय है जब नवाचारों को नेतृत्व करना होगा। साथ ही



CR-value) 3.367 प्राप्त हुआ है। 43 (df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान 1.96 एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता का मान 2.59 क्रांतिक अनुपात की तालिका में दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता के दोनों स्तर (0.05 व 0.01) स्तर के सार्थकता मान से कम है। अतः यहां निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के शैक्षिक नेतृत्व व्यवहार के क्षमता उत्प्रेरक में सार्थक अंतर है। उपर्युक्त तालिका में दिए गए मध्यमानों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के शैक्षिक नेतृत्व व्यवहार के क्षमता उत्प्रेरक के गुण निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की तुलना अधिक है।



**आरेख 2:** राजकीय निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के नेतृत्व के 'क्षमता उत्प्रेरक' के मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात मान का दण्डारेखीय प्रदर्शन

### परिकल्पना को सत्यापन

परिकल्पना संख्या 1 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का परीक्षण तीन उप परिकल्पना के आधार पर करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुआ है:—

H=(A) राजकीय एवं निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का परीक्षण शैक्षिक नेतृत्व व्यवहार के छः आयामों के आधार पर करने से निम्नलिखित सम्प्राप्तिया प्राप्त हुई

1. राजकीय निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार के प्रथम आयाम "क्षमता उत्प्रेरक" में कोई साथ अंतर नहीं है
2. राजकीय निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार के द्वितीय आयाम "टीम निर्माता" में सार्थकता 0.05 स्तर पर सार्थक में अंतर है। परन्तु सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया है
3. राजकीय निजी विद्यालयों के संस्था प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार के तृतीय आयाम "निष्पत्ति आमुख" में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H=(C) राजकीय एवं निजी विद्यालयों के महिला संस्था प्रधानों की नेतृत्व क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का परीक्षण शैक्षिक नेतृत्व व्यवहार के तीन आयामों के आधार पर करने से निम्नलिखित सम्प्राप्तिया प्राप्त हुई

1. राजकीय निजी विद्यालयों के महिला संस्था प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार के प्रथम आयाम "क्षमता उत्प्रेरक" में कोई साथ अंतर नहीं है

2. राजकीय निजी विद्यालयों के महिला संस्था प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार के द्वितीय आयाम "टीम निर्माता" में सार्थक अंतर नहीं है
3. राजकीय निजी विद्यालयों के महिला संस्था प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार के तृतीय आयाम "निष्पत्ति आमुख" में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना संख्या 2 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के प्रबंधकीय कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का परीक्षण तीन उपपरिकल्पनाओं के आधार पर करने से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं

H=2(A) राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के प्रबंधकीय कौशल में कोई सार्थक अंतर नहीं है, का परीक्षण प्रबंधकीय प्रभावशीलता कौशल के आधार पर करने से निम्नलिखित सम्प्राप्तिया प्राप्त हुई हैं।

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के प्रबंधकीय कौशल के प्रथम कारक "कार्यात्मक प्रभावशीलता" में कोई सार्थक अंतर नहीं है
2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के प्रबंधकीय कौशल के द्वितीय कारक "पारस्परिक प्रभावशीलता" में कोई सार्थक अंतर नहीं है
3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाचार्य के प्रबंधकीय कौशल के तृतीय कारक "व्यक्तिगत प्रभावशीलता" में कोई सार्थक अंतर नहीं है

### संदर्भ

1. अलतेकर, ए. एस.: प्राचीन भारत में शिक्षा
2. अरुणिमा (1989): एक सामाजिक मनोविज्ञान के मूल्य निर्धारण में बच्चों के बीच आक्रामकता का अध्ययन
3. अस्थाना विपिन एवं अस्थाना श्वेता (2005): मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2
4. काल्कर, डी वैन (1972): नीदरलैंड में ग्रह संबंधी वातावरण बच्चों की विद्यालय हेतु तैयारी को कैसे प्रभावित करता है
5. कपिल एच के (1996): सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. कुदेशिया, उमेश चंद्र (2006): शिक्षा प्रशासन, पंचम संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
7. कौल, लोकाश (1998): शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली
8. कोठारी तथा कोठारी :— सांख्यिकी सिद्धांत एवं व्यवहार मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल
9. गैरट हेनरी ई (1972): शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना
10. गोपाल, डी प्रसाद (1992): शोध विधि विधान के मूल तत्व, भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ठाकुर खाड़ी रोड कदम कुआं, पटना
11. गुप्ता एस पी तथा गुप्ता अल्का (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
12. गुप्ता एसपी (1997): सांख्यिकी विधियां, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
13. डांस कुदेशिया उमेशचंद्र (1981) शिक्षा प्रशासन विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ 166
14. डांस कुदेशिया उमेशचंद्र (1981) शिक्षा प्रशासन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा पृ 166